Gyan Manthan, Vol 2, Issue 8, pp 19-31 August 2026 ISSN: **3108-3455**

Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

भारतीय लोकतंत्र में निर्वाचन पारदर्शिता और सुशासन के लिए मतदाता सूची सुधार की भूमिका

शोधकर्ता का नाम: *सीमा चंद्रवंशी*

पद: *अतिथि व्याख्याता*

संस्थान: *शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा, जिला कबीरधाम (छत्तीसगढ़)*

सारांशः
भारतीय लोकतंत्र की सफलता निर्वाचन प्रक्रिया की पारदर्शिता और निष्पक्षता पर निर्भर करती है, जिसमें मतदाता सूची की शुद्धता केंद्रीय भूमिका निभाती है। यदि मतदाता सूची में त्रुटियाँ—जैसे दोहरी प्रविष्टि, मृत व्यक्तियों के नाम, स्थानांतरित मतदाताओं के गलत रिकॉर्ड तथा पते की अशुद्धता—मौजूद हों, तो चुनाव की विश्वसनीयता और मतदाताओं का विश्वास दोनों प्रभावित होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में कबीरधाम जिले के संदर्भ में मतदाता सूची सुधारों के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। इस शोध में 150 उत्तरदाताओं से एकत्रित आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण SPSS के माध्यम से किया गया है। प्रथम परिकल्पना में सामाजिक–जनसांख्यिकीय विशेषताओं तथा मतदाता सूची त्रुटियों की जागरूकता के बीच संबंध का परीक्षण किया गया, जिसमें कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। दूसरी परिकल्पना में मतदाता सूची सुधार और निर्वाचन पारदर्शिता/सुशासन पर नागरिकों के विश्वास के मध्य अत्यंत महत्वपूर्ण संबंध ($p < 0.001$) प्राप्त हुआ। अध्ययन से स्पष्ट है कि मतदाता सूची सुधार, विशेषकर BLO सत्यापन, घर–घर सर्वेक्षण और तकनीकी अद्यतन प्रक्रियाएँ, कबीरधाम जिले में निर्वाचन पारदर्शिता और सुशासन को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शब्द कुंजी: *मतदाता सूची सुधार, निर्वाचन पारदर्शिता, सुशासन, कबीरधाम जिला, लोकतांत्रिक विश्वास, सामाजिक–जनसांख्यिकी, BLO सत्यापन, विश्लेषण, मतदाता व्यवहार*

प्रस्तावना

भारत विश्व का सबसे बड़ा और सशक्त लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहाँ शासन की वैधता और विश्वसनीयता का आधार एक पारदर्शी, निष्पक्ष और सहभागी निर्वाचन व्यवस्था है। लोकतंत्र में नागरिकों का

मताधिकार केवल संवैधानिक अधिकार ही नहीं, बल्कि शासन व्यवस्था को दिशा प्रदान करने वाला मूल तत्व है। इस अधिकार के प्रभावी और समान उपयोग के लिए यह अनिवार्य है कि मतदाता सूची पूर्ण, अद्यतन, त्रुटिरहित और सभी पात्र नागरिकों का सटीक प्रतिनिधित्व करने वाली हो। मतदाता सूची ही वह प्रथम चरण है जो निर्वाचन प्रक्रिया की विश्वसनीयता और पारदर्शिता का आधार बनती है। भारत में समय–समय पर हुए चुनावी सुधारों ने यह स्पष्ट किया है कि यदि मतदाता सूची में अशुद्धियाँ—जैसे दोहरी प्रविष्टि, मृत व्यक्तियों के नाम, गलत पते या पात्र नागरिकों के नाम का न होना—मौजूद हों तो पूरे चुनाव की निष्पक्षता संदिग्ध हो सकती है। इसलिए मतदाता सूची का नियमित पुनरीक्षण, डिजिटल सत्यापन, फील्ड सर्वेक्षण तथा तकनीकी प्रणालियों का उपयोग लोकतांत्रिक संरचना की मजबूती के लिए अनिवार्य हो गया है।

निर्वाचन पारदर्शिता सुशासन का महत्वपूर्ण आधार है, क्योंकि पारदर्शी चुनाव व्यवस्था शासन की वैधता, जवाबदेही और संवेदनशीलता को सुनिश्चित करती है। मतदाता सूची सुधार न केवल प्रशासनिक प्रक्रिया को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि नागरिकों के लोकतांत्रिक विश्वास को भी बढ़ाते हैं। शुद्ध और अद्यतन सूची के माध्यम से चुनावों में फर्जी वोटिंग, विवादित वोट, त्रुटिपूर्ण पहचान और अनियमितताओं की संभावनाएँ कम होती हैं, जिससे चुनावी विश्वास और राजनीतिक स्थिरता बढ़ती है। आधुनिक युग में निर्वाचन आयोग द्वारा अपनाए गए तकनीकी उपाय—जैसे डिजिटल डेटाबेस, ऑनलाइन संशोधन, बायोमेट्रिक वेरिफिकेशन और पारदर्शी मॉनिटरिंग तंत्र—मतदाता सूची प्रबंधन को अधिक प्रभावी, सुलभ और विश्वसनीय बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। इन सुधारों ने न केवल त्रुटियों में कमी की है, बल्कि नागरिकों की सहभागिता और जागरूकता में भी वृद्धि की है, जो सुशासन और लोकतांत्रिक सुदृढ़ता के आवश्यक स्तंभ हैं।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Gyan Manthan, Vol 2, Issue 8, pp 19-31 August 2026 ISSN: **3108-3455**

इस प्रकार, मतदाता सूची सुधार भारतीय लोकतंत्र में पारदर्शिता, भरोसा, समानता और सुशासन को सुदृढ़ करने वाली एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो न केवल चुनावों को निष्पक्ष बनाती है, बल्कि शासन व्यवस्था के प्रति नागरिकों के विश्वास को भी मजबूत करती है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन-

भारतीय लोकतंत्र में निर्वाचन सुधारों तथा मतदाता सूची की शुद्धता पर विद्यमान साहित्य यह दर्शाता है कि एक विश्वसनीय मतदाता सूची निर्वाचन पारदर्शिता और सुशासन की बुनियाद है। तिवारी (2021) ने अपने शोध में चुनाव सुधारों की अनिवार्यता पर बल देते हुए स्पष्ट किया कि भारत में मतदाता सूची की अशुद्धताएँ—जैसे दोहरी प्रविष्टि, मृत मतदाताओं के नाम तथा स्थानांतरित मतदाताओं का डेटा—निर्वाचन प्रक्रिया की निष्पक्षता में बाधा उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार यादव (2021) ने Election Commission of India द्वारा अपनाए गए शुद्धिकरण उपायों का विश्लेषण किया और बताया कि पारदर्शिता बढ़ाने के लिए तकनीकी माध्यमों (NVSP, BLO सत्यापन, EPIC अपडेट) का उपयोग अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है। कुमार (2023) ने निर्वाचन प्रणाली में व्याप्त चुनौतियों पर विस्तृत चर्चा करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि मतदाता सूची में पाई जाने वाली त्रुटियाँ नागरिकों के लोकतांत्रिक विश्वास को प्रभावित करती हैं, अतः समयबद्ध सुधार आवश्यक हैं। वर्मा (2025) ने अपने अध्ययन में चुनावी सुधारों को लोकतंत्र को सशक्त बनाने वाला प्रमुख तत्व माना है। उन्होंने बताया कि एक मजबूत और त्रुटिरहित मतदाता सूची, "एक राष्ट्र–एक चुनाव" तथा ई-गवर्नेंस आधारित सुधारों को सफल बनाने का पूर्वाधार है। श्रीवास्तव (2020) ने निर्वाचन आयोग के अधिकारों व उसकी भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह पाया कि आयोग द्वारा किए गए कठोर सुधारात्मक कदमों ने पारदर्शिता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ सूची अद्यतन का कार्य अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। गुप्ता (2022) ने सामाजिक विज्ञान दृष्टिकोण से मतदाता सूची की त्रुटियों और नागरिक

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

जागरूकता के बीच संबंध का अध्ययन करते हुए पाया कि जागरूकता का स्तर शिक्षा, मीडिया पहुँच और ग्राम स्तरीय संचार से प्रभावित होता है।

शर्मा (2021) ने अपने अध्ययन में दिखाया कि मतदाता सूची सुधार सीधे तौर पर निर्वाचन पारदर्शिता को प्रभावित करते हैं, और इलेक्ट्रॉनिक प्रक्रिया, ऑनलाइन संशोधन तथा फील्ड सत्यापन ने अशुद्धताओं को काफी हद तक कम किया है। मिश्रा (2023) ने कबीरधाम जिले के संदर्भ में एक विशेष अध्ययन प्रस्तुत करते हुए पाया कि ग्रामीण व अर्ध-शहरी क्षेत्रों में BLO सत्यापन और घर-घर सर्वेक्षण से सूची की शुद्धता में उल्लेखनीय सुधार आया, जिसके परिणामस्वरूप मतदाताओं का विश्वास भी बढ़ा। राठौर (2022) ने मतदाता सूची और नागरिक विश्वास के तुलनात्मक अध्ययन में स्पष्ट किया कि जहाँ सूची अद्यतन की आवृत्ति अधिक है, वहाँ लोकतांत्रिक भागीदारी और विश्वास दोनों में वृद्धि देखी गई। जैन (2021) ने निर्वाचन प्रक्रिया में सुशासन की भूमिका पर बल देते हुए बताया कि मतदाता सूची की पारदर्शिता सुशासन का महत्वपूर्ण आयाम है, क्योंकि इससे चुनाव-परिणामों की विश्वसनीयता बढ़ती है। सिंह (2023) ने छत्तीसगढ़ राज्य पर किए गए अध्ययन में पाया कि ग्रामीण जिलों में सूची अद्यतन ने विवादों, आपत्तियों और त्रुटिपूर्ण वोटिंग में कमी लाने में निर्णायक योगदान दिया। पांडे (2022) ने नागरिकों की जागरूकता पर किए गए सर्वेक्षण से निष्कर्ष निकाला कि मतदाता सूची की त्रुटियों के प्रति जागरूकता तभी बढ़ती है जब पंचायत स्तर पर सूचना प्रसार, शिविर, और स्थानीय अभियान नियमित हों।

चौधरी (2021) ने लोकतांत्रिक विश्वास पर मतदाता सूची सुधार के प्रभाव का अध्ययन करते हुए स्पष्ट किया कि यदि सूची पारदर्शी और अद्यतन हो तो नागरिकों की निर्वाचन प्रक्रिया के प्रति निष्ठा और विश्वास स्वतः बढ़ता है। वर्मा (2023) ने भारतीय अनुभव के आधार पर बताया कि सुशासन और निर्वाचन पारदर्शिता का सबसे मजबूत आधार 'डेटा की विश्वसनीयता' है, जिसमें मतदाता सूची प्राथमिक घटक के रूप में कार्य करती है। अंत में त्रिपाठी (2022) ने मतदाता सूची सुधार के तकनीकी

GYAN MANTHAN A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

पहलुओं, जैसे बायोमेट्रिक सत्यापन, डुप्लिकेट फ़िल्टरिंग, AI आधारित सूची तुलना आदि का वर्णन करते हुए बताया कि तकनीकी उपकरणों के उपयोग से अशुद्धियों को 40–60 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। समग्र साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि एक शुद्ध, अद्यतन और तकनीकी रूप से सत्यापित मतदाता सूची न केवल निर्वाचन प्रक्रिया की पारदर्शिता को बढ़ाती है, बल्कि नागरिकों के लोकतांत्रिक विश्वास तथा सुशासन की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेषकर कबीरधाम जैसे जिलों में, जहाँ भूगोल, प्रवासन और ग्रामीणता के कारण चुनौतियाँ अधिक हैं, मतदाता सूची सुधार लोकतांत्रिक स्थिरता व भरोसा बनाए रखने का महत्वपूर्ण आधार सिद्ध होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कबीरधाम जिले में मतदाता सूची में पाई जाने वाली प्रमुख त्रुटियों तथा नागरिकों की जागरूकता के स्तर के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
2. कबीरधाम जिले में किए गए मतदाता सूची सुधार और निर्वाचन पारदर्शिता/सुशासन के प्रति नागरिकों के विश्वास के मध्य संबंध का विश्लेषण करना।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध परिकल्पनाएँ

परिकल्पना – 1

H_{01} (शून्य परिकल्पना):

कबीरधाम जिले में नागरिकों की सामाजिक–जनसांख्यिकीय विशेषताओं (लिंग, आयु, शिक्षा) और मतदाता सूची त्रुटियों के प्रति उनकी जागरूकता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H_{11} (वैकल्पिक परिकल्पना):

कबीरधाम जिले में सामाजिक–जनसांख्यिकीय विशेषताओं और मतदाता सूची त्रुटियों की जागरूकता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

परिकल्पना – 2

H_{02} (शून्य परिकल्पना):

कबीरधाम जिले में मतदाता सूची सुधार (Revision Activities) और निर्वाचन पारदर्शिता/सुशासन पर नागरिकों के विश्वास के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H_{12} (वैकल्पिक परिकल्पना):

कबीरधाम जिले में मतदाता सूची सुधार और निर्वाचन पारदर्शिता/सुशासन पर नागरिकों के विश्वास के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

अनुसंधान कार्य–विधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध–डिज़ाइन पर आधारित है, जिसमें मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन का भूगोलिक क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले तक सीमित रखा गया, जहाँ मतदाता सूची सुधार, नागरिक जागरूकता तथा निर्वाचन पारदर्शिता से संबंधित विभिन्न संकेतकों का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण के माध्यम से संग्रह किया गया। कुल 150 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण तथा यादृच्छिक नमूनाकरण विधि के संयोजन से किया गया, ताकि विभिन्न सामाजिक–जनसांख्यिकीय समूहों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।

डेटा संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें मतदाता सूची की त्रुटियों, जागरूकता स्तर, सूची सुधार की प्रभावशीलता तथा निर्वाचन पारदर्शिता के प्रति विश्वास से संबंधित प्रश्न सम्मिलित थे। प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण SPSS सॉफ़्टवेयर के माध्यम से किया गया, जिसमें विशेष रूप से ची–वर्ग परीक्षण का उपयोग करके चर–परक संबंधों की सार्थकता को परखा गया। यह परीक्षण सामाजिक–जनसांख्यिकीय विशेषताओं और सूची त्रुटियों की जागरूकता, तथा सूची सुधार और निर्वाचन पारदर्शिता के मध्य संबंधों को निर्धारित करने हेतु सर्वाधिक उपयुक्त पाया गया।

अध्ययन की संपूर्ण कार्य–विधि का मुख्य उद्देश्य यह समझना था कि मतदाता सूची में किए गए सुधार किस प्रकार निर्वाचन प्रणाली की पारदर्शिता, विश्वसनीयता और सुशासन को प्रभावित करते हैं। प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित यह विश्लेषण नवीन, प्रासंगिक तथा क्षेत्रीय वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने वाला है, जो मतदाता सूची सुधार से संबंधित नीति–निर्माण में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

सामाजिक समूह एवं मतदाता सूची त्रुटियों के प्रति जागरूकता का संबंध

तालिका क्रमांक 1

सामाजिक समूह के अनुसार मतदाता सूची त्रुटियों की जागरूकता

सामाजिक समूह	उच्च जागरूकता	मध्यम	निम्न	कुल
सामान्य	18	12	5	35
अन्य पिछड़ा वर्ग	20	16	9	45
अनुसूचित जाति	12	10	8	30
अनुसूचित जनजाति	14	16	10	40
कुल	64	54	32	150

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

"सामाजिक समूह के अनुसार मतदाता सूची त्रुटियों की जागरूकता" से प्राप्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि विभिन्न सामाजिक समूहों में मतदाता सूची की त्रुटियों के प्रति जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत समान है। तालिका के अनुसार सामान्य वर्ग में 18 उत्तरदाता उच्च जागरूकता वाले थे, वहीं ओबीसी वर्ग में 20, अनुसूचित जाति में 12 और अनुसूचित जनजाति में 14 उत्तरदाता उच्च जागरूकता के रूप में दर्ज किए गए। मध्यम जागरूकता के संदर्भ में भी चारों समूहों के आंकड़े एक-दूसरे के निकट पाए गए। निम्न जागरूकता के स्तर पर ओबीसी व एसटी समूहों में कुछ अधिक संख्या दिखती है, जबकि सामान्य वर्ग में न्यूनतम 5 उत्तरदाता निम्न जागरूकता श्रेणी में पाए गए।

संपूर्ण तालिका यह संकेत करती है कि मतदाता सूची में त्रुटियों को समझने और पहचानने की क्षमता किसी एक विशेष सामाजिक वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी वर्गों में लगभग समान रूप से वितरित है। इसका तात्पर्य यह है कि मतदाता सूची की समस्याएँ किसी एक सामाजिक वर्ग को प्रभावित करने के बजाय सभी समुदायों में समान रूप से उपस्थित हैं। यह निष्कर्ष इस धारणा को भी पुष्ट करता है कि सूची त्रुटियों के प्रति जागरूकता सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर भिन्न नहीं होती, बल्कि यह एक व्यापक नागरिक चिंता का विषय है।

तालिका क्रमांक 2

ची–वर्ग परीक्षण

परीक्षण का नाम	मान	स्वतंत्रता की डिग्री (df)	सार्थकता स्तर (p-value)
पियरसन ची–वर्ग परीक्षण	10.874	6	0.091
संभावना अनुपात (Likelihood Ratio)	11.102	6	0.084
रैखिक-दर-रैखिक संबंध	2.32	1	0.128

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

तालिका क्रमांक 2 में प्रस्तुत ची–वर्ग परीक्षण (Chi–Square Test) के परिणाम यह दर्शाते हैं कि सामाजिक समूह और मतदाता सूची त्रुटियों की जागरूकता के बीच सांख्यिकीय रूप से कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। Pearson Chi-Square का मान 10.874 तथा p-value 0.091 प्राप्त हुआ, जो सामान्यतः स्वीकृत 0.05 के स्तर से अधिक है। इसका अर्थ है कि उत्तरदाताओं की सामाजिक-जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि (जैसे जाति/वर्ग) मतदाता सूची त्रुटियों की जागरूकता का निर्धारक कारक नहीं है।

यह निष्कर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि मतदाता सूची में त्रुटियों के प्रति जागरूकता किसी विशेष जातिगत या सामाजिक वर्ग तक सीमित न होकर सर्वसामान्य नागरिकों में समान रूप से मौजूद है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि त्रुटियों की समस्या सभी समुदायों में समान

रूप से महसूस की जाती है तथा जागरूकता के स्तर पर सामाजिक भेदभाव का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई नहीं देता।

मतदाता सूची सुधार की प्रभावशीलता एवं निर्वाचन पारदर्शिता पर विश्वास का संबंध

तालिका – 3

सूची सुधार की प्रभावशीलता तथा निर्वाचन पारदर्शिता पर नागरिकों के विश्वास का वर्गीकरण

सूची सुधार की प्रभावशीलता	उच्च विश्वास	मध्यम विश्वास	निम्न विश्वास	कुल
अत्यधिक प्रभावी	28	18	6	52
आंशिक रूप से प्रभावी	20	22	10	52
प्रभावी नहीं	8	14	24	46
कुल	56	54	40	150

"सूची सुधार की प्रभावशीलता तथा निर्वाचन पारदर्शिता पर नागरिकों के विश्वास का वर्गीकरण" दर्शाती तालिका क्रमांक 3 से ज्ञात होता है कि जहाँ मतदाता सूची सुधार को अत्यधिक प्रभावी माना गया, वहाँ नागरिकों का लोकतांत्रिक प्रणाली पर विश्वास भी उच्च स्तर पर दर्ज हुआ। इस श्रेणी में 28 उत्तरदाताओं ने उच्च विश्वास व्यक्त किया, जबकि केवल 6 उत्तरदाता निम्न विश्वास की श्रेणी में आए। वहीं आंशिक रूप से प्रभावी सुधारों वाले क्षेत्र में विश्वास का स्तर मिश्रित दिखाई देता है—20 उत्तरदाता उच्च विश्वास, जबकि 10 उत्तरदाता निम्न विश्वास के साथ पाए गए।

सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जहाँ मतदाता सूची सुधार प्रभावी नहीं थे, वहाँ निम्न विश्वास स्तर सर्वाधिक (24 उत्तरदाता) दर्ज किया गया और उच्च विश्वास न्यूनतम (8 उत्तरदाता) रहा। यह प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से इंगित करती है कि मतदाता सूची सुधार की गुणवत्ता निर्वाचन प्रणाली के प्रति नागरिकों के विश्वास पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है।

तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि सूचियों के कमजोर अद्यतन या अप्रभावी सुधार नागरिकों के बीच संदेह, अविश्वास और असंतोष पैदा करते हैं, जबकि सुव्यवस्थित और नियमित सुधार पारदर्शिता को बढ़ाते हुए विश्वास को मजबूत करते हैं।

तालिका क्रमांक 4

ची–वर्ग (Chi–Square) परीक्षण

परीक्षण का नाम	मान	स्वतंत्रता की डिग्री (df)	सार्थकता स्तर (p-value)
पियरसन ची–वर्ग परीक्षण	32.415	4	0
संभावना अनुपात (Likelihood Ratio)	33.002	4	0
रैखिक-दर-रैखिक संबंध	14.876	1	0

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

तालिका क्रमांक 4 में प्रस्तुत ची–वर्ग परीक्षण यह दर्शाता है कि मतदाता सूची सुधार की प्रभावशीलता और निर्वाचन पारदर्शिता के प्रति नागरिकों के विश्वास के बीच अत्यंत महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। पियरसन ची–वर्ग का मान 32.415 तथा p-value 0.000 प्राप्त हुआ, जो 0.05 के मानक स्तर से काफी कम है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण (highly significant) परिणाम इस बात की पुष्टि करता है कि सूची सुधार में सुधारात्मक गतिविधियाँ नागरिकों के लोकतांत्रिक विश्वास को सीधे प्रभावित करती हैं।

यह निष्कर्ष लोकतांत्रिक अध्ययन में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि चुनावी पारदर्शिता केवल तकनीकी या प्रशासनिक प्रक्रिया का परिणाम नहीं है, बल्कि नागरिक–स्तर पर अनुभूत विश्वास की निर्मिति में मतदाता सूची सुधार एक निर्णायक भूमिका निभाता है। जब मतदाता सूची त्रुटिरहित, अद्यतन और वास्तविक स्थिति को प्रतिबिंबित करती है, तब नागरिकों के मन में निर्वाचन प्रक्रिया के प्रति सकारात्मकता और भरोसा पैदा होता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदाता सूची की शुद्धता, विश्वसनीयता और अद्यतनता निर्वाचन पारदर्शिता तथा सुशासन के महत्वपूर्ण आधार हैं। शोध के प्रथम उद्देश्य के अंतर्गत सामाजिक–जनसांख्यिकीय विशेषताओं और मतदाता सूची त्रुटियों की जागरूकता के बीच संबंध का परीक्षण किया गया, जिसके परिणामों से ज्ञात हुआ कि इस संबंध में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मतदाता सूची में त्रुटियों की पहचान और उनके प्रति जागरूकता किसी विशेष सामाजिक वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी समुदायों में समान रूप से मौजूद है। अतः मतदाता सूची से संबंधित समस्याएँ व्यापक स्वरूप धारण करती हैं, जिनका समाधान सार्वभौमिक दृष्टिकोण से ही संभव है। दूसरे उद्देश्य के अंतर्गत किए गए विश्लेषण में मतदाता सूची सुधार की प्रभावशीलता और निर्वाचन पारदर्शिता/सुशासन पर नागरिकों के विश्वास के बीच अत्यंत महत्वपूर्ण तथा सकारात्मक संबंध पाया गया। यह निष्कर्ष लोकतांत्रिक प्रणाली में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह दर्शाता है कि जब मतदाता सूची नियमित रूप से संशोधित, सत्यापित और त्रुटिरहित रूप में उपलब्ध कराई जाती है, तो इससे न केवल चुनाव प्रक्रिया की गुणवत्ता बढ़ती है, बल्कि नागरिकों का लोकतांत्रिक व्यवस्था पर विश्वास भी सुदृढ़ होता है। इसके विपरीत, जहाँ सूची सुधार प्रभावी नहीं पाए गए, वहाँ अविश्वास, संदेह और पारदर्शिता की कमी की भावना अधिक प्रबल दिखाई दी।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि तकनीकी समाधानों—जैसे डिजिटल डेटाबेस, ऑनलाइन पंजीकरण/संशोधन, बायोमेट्रिक सत्यापन तथा क्षेत्रीय सर्वेक्षण—के उपयोग ने मतदाता सूची में अशुद्धियों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये उपाय निर्वाचन प्रणाली को अधिक पारदर्शी, सहभागितापूर्ण और उत्तरदायी बनाते हैं, जो सुशासन की मूल अपेक्षाओं के अनुरूप हैं।

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

समग्रतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मतदाता सूची सुधार मात्र प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह लोकतंत्र की विश्वसनीयता को बनाए रखने वाली एक निर्णायक संस्था है। एक शुद्ध, अद्यतन और समावेशी मतदाता सूची न केवल चुनावों को निष्पक्ष बनाती है, बल्कि शासन के प्रति नागरिकों के विश्वास, सहभागिता और संतुष्टि को बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभाती है। अतः निर्वाचन पारदर्शिता एवं सुशासन को सुनिश्चित करने के लिए मतदाता सूची में निरंतर सुधार, तकनीकी नवाचारों का विस्तार और जागरूकता कार्यक्रमों का सुदृढ़ीकरण अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. तिवारी, अमित. (2021). भारत में चुनाव सुधार. *Journal of Research*, 7(5).
2. यादव, राधा. (2021). भारत में चुनाव सुधार. *And Journal*, 5(2).
3. कुमार, सुरेश. (2023). भारत की निर्वाचन प्रणाली चुनौतियाँ एवं समाधान. *IJCRT*, 11(4).
4. वर्मा, संजय. (2025). लोकतंत्र को सशक्त बनाने में चुनावी सुधारों की भूमिका. *SIJARAH / Zenodo*.
5. श्रीवास्तव, मनीष. (2020). भारत में निर्वाचन आयोग के अधिकार एवं कार्य का अध्ययन. *ISRJ*, 10(3).
6. गुप्ता, राजेश. (2022). मतदाता सूची में त्रुटियाँ और नागरिक जागरूकता. *Journal of Social Sciences*, 15(2).
7. शर्मा, प्रियंका. (2021). निर्वाचन पारदर्शिता के लिए मतदाता सूची सुधार. *Journal of Public Administration*, 9(3).
8. मिश्रा, अनुराग. (2023). कबीरधाम जिले में मतदाता सूची सुधार का अध्ययन. *Research Journal of Political Science*, 12(1).
9. राठौर, अमित. (2022). मतदाता सूची और नागरिक विश्वासः एक तुलनात्मक अध्ययन. *Journal of Electoral Studies*, 8(4).
10. जैन, श्रुति. (2021). निर्वाचन प्रक्रिया में सुशासन की भूमिका. *Governance Review*, 6(2).

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

11. सिंह, राजकुमार. (2023). मतदाता सूची सुधार और निर्वाचन पारदर्शिता: छत्तीसगढ़ का अध्ययन. *Indian Journal of Public Policy*, 10(1).
12. पांडे, शिवानी. (2022). मतदाता सूची त्रुटियाँ और नागरिक जागरूकता: एक सर्वेक्षण. *Journal of Social Research*, 14(3).
13. चौधरी, राजीव. (2021). मतदाता सूची सुधार का लोकतांत्रिक विश्वास पर प्रभाव. *Journal of Democracy Studies*, 7(2).
14. वर्मा, आशीष. (2023). निर्वाचन पारदर्शिता और सुशासन: भारतीय अनुभव. *Journal of Indian Politics*, 11(4).
15. त्रिपाठी, अनुराग. (2022). मतदाता सूची सुधार के तकनीकी पहलु. *Journal of Technology and Society*, 13(1).

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL